समीक्षार्थ

वृक्ष, दीवार और अंधा कुआं

(कविता-संग्रह)

रचना संसार

काव्य संग्रह -

करूणा, कचनार, कंजकां, काइया के रुख, अत्थरा घोड़ा, उदास पतां दी दास्तां, परत दर परत, सुक्के पत्ते दी दस्तक (प्रकाशनधीन)

ग़ज़ल संग्रह -

सागर तों सलीब तक, कासनी धुप्पां, ग़िज़ाल, (शीघ्र प्रकाशय)

अनुवाद

संस्कृत से पंजाबी -

दस कुमार चरित (दंडी), बुद्ध चरित (अश्वघोष), दस उपनिषद् व नैषध चरित (प्रकाशनाधीन),

पंजाबी से हिन्दी -

बिखरा हुआ मानव ,(डा. जोगिन्द्र सिंह निराला की कहानियां), गुरमेल मडाहड़ की श्रेष्ठ कहानियां, तवारीख गुरू खालसा (भाग पहला)

हिन्दी से पंजाबी -

मुरदिआं दा येह (रांघेय राघव)

उर्दू से देवनागरी -

लिप्यांतर - कहकशां (उर्दू शायर मेहर चंद कौसर की ग़ज़लें)

अंग्रेज़ी से पंजाबी -

गीतांजली, जिओंदी कुदरत दे वेग, भूगर्भ विज्ञान.

आलोचना -

बावा बलवंत काव्य मूल्यांकन

बाल सहित्य -

जतजीव

वृक्ष, दीवार और अंधा कुआं

(कविता-संग्रह)

प्रीतम सिंह राही

नवकला प्रकाशन

रंग भूमि, बरनाला (पंजाब)-१४८१०१

VRIKHASH DEEWAR AUR ANDHA KUAN
By - PRITAM SINGH RAHI
Sahitya Marg, BARNALA (PB) - 148101

Pub. By - Navkala Prakashan
Rang Bhoomi, BARNALA (PB) - 148101

पादक - बसंत कुमार रत्न

प्रीतम सिंह राही (दूरभाष 20403)
प्रथम छाप : 1994.
प्रकाशक - नवकला प्रकाशन, रंग भूमि बरनाला (पंजाब)
148101
मुद्रक - अमित ग्राफिक्स बरनाला. (दूरभाष 33244)
मूल्य - पचास रूपये
पेपर बैक-बीस रूपये

अर्न्तराष्ट्रीय चेतना के नाम



अनुक्रमणिका

परत-दर-परत

जब कोई अपने भीतर उतरता है
तो पाताल दर पाताल
वह ऐसे तल पर पहुँचता है
जहां उसका अतीत
गुच्छा - मुच्छा हुआ
एक कोने में
स्थित दिखाई देता है.

जब उसकी निद्रा भंग होती है
तो अनेकों आकार अनेकों चित्र
एक फ़िल्म की भांति
एक साथ ही
उसकी आंखों के आगे घूम जाते हैं.
सृजन के पूर्व का संसार
जो टुकड़ों एवं कतरनों में विभक्त था
अनेकों आकारों और शक्लों में बदल जाता है.

मन की सैंकड़ों परतें हैं
प्रत्येक परत के नीचे
एक दुनिया होती है
कितनी दुनियाएं
कितने ब्रह्मांड
जो सृजन से पूर्व भी स्थित थे
एक चक्कर सा काटते हैं.
चक्रव्यूह में फंसे अभिमन्यु की भांति
कुछ देर के लिए
उसे बाहर निकलने का
कोई रास्ता दिखाई नहीं देता.

परन्तु जब वह नीचे से
ऊपर को उठता है
तो विरासत, परत - दर - परत
उसके रक्त में तैरती है
पीढ़ी - दर - पीढ़ी
यह केवल आकार बदलती है
नये रूपों में रूपायित होती है.
विरासत की परतों में
सदियों का इतिहास होता है.

विरासत जब केचुंलि बन जाती है
तो आंखों से
कुछ दिखाई नहीं देता
जीवन में ठहराव आ जाता है
परन्तु फिर उसके भीतर
कुछ मचलता है
वह झाड़ियों के बीच से गुज़रता है
विरासत की केचुंलि उतर जाती है
यह भटकन
जैसे मनुष्य की नियति है
जो ''अचल'' के स्थान पर
''चल'' में विश्वास रखती है
जिसमें मरघट की शांति नहीं
चौरस्तों का कोलाहल है.
कोई भी जहां नबी नहीं
कोई भी जहां अजनबी नहीं
कौन कहता है वहां ज़िन्दगी नहीं
ज़िन्दगी वहां है
जहां बंदगी नहीं
जहां संघर्ष है
वहां मुफ़लिसी नहीं
अमल के बिना
आदमी आदमी नहीं.

लकीर के .फकीर

ये परिवर्तनशील ऋतुएँ
उदय एंवं अस्त होते दिन
वृक्षों के कभी हरित्त
कभी पीले पत्ते
बहते हुए दरिया
कभी न रुकने वाली हवा
ये सभी कहते हैं
कभी भी कुछ एक सा नहीं रहता
सभी कुछ बदलता है
प्रत्येक वस्तु
अपूर्णता से पूर्णता की ओर बढ़ रही है.

अमीबा से आदम तक की यात्रा
लाखों वर्षें की कथा है
अंड से ब्रह्मांड बनने की बात
करोड़ों वर्षों का सफ़र है
कुछ भी न तो
एक दिन में पैदा होता है
कुछ भी न तो
एक दिन में विनशता है.

सांप जब केंचुली छोड़ता है
कहते हैं उसका नया जनम होता है
उसकी आंखों पर से पर्दा हट जाता है
वह अंधरे से रोशनी की ओर आता है
नया - ताज़ा
एक नये जनमे बच्चे जैसा

जो विकसता है.

अणु से ब्रह्मांड तक
सभी कुछ चल रहा है
सभी कुछ आगे बढ़ रहा है
पर जो लकीर के फ़कीर होते हैं
पुरखों की जूठन ही खाते हैं
उनके पद - चिन्हों पर चलते हैं.

वह अनजान है
उन्हे कुछ पता नहीं
कि पद - चिन्हों में पांव रखने से
मंजिल नहीं मिलती
पद - चिन्ह तो सांचों की तरह होते हैं
जो न सिमट सकते हैं
जो न फैल सकते हैं
पुरखों की विरासत की जुगाली किये जाना
पुरखों के पद - चिन्हों पर चलते रहना
कहां की समझ है ?
कहां की बुद्धि है ?
इसका इनके लिए कोई अर्थ नहीं होता.

—

वृक्ष बन जाने की इच्छा

मैं जो वृक्ष नहीं बन पाया
एक अभागे बीज की तरह
मनों मिट्टी के नीचे दबा
सदियों से प्रकाश के लिए
तरस रहा हूँ
मैं जब भी
अपने अंदर झुका हूँ
तो मेरे बीच का पुरा - मानव
पत्थर के हथियारों से
पशुओं की खाल उधेड़ता उनके कच्चे मास को
बड़े आनंद से खाता हुआ देखा है.
मुझे अपने बीच के
पुरा - मानव से
कोई नफ़रत नहीं
वह मेरी नींव है.

यह वही था
जिसने पत्थरों से आग पैदा की
जिसने हवा पानी झक्खड़ और अंधड़ों को
देवते बना दिया
बिल्कुल अपने जैसे
बंदों के से.

बाईबल में लिखा है
कि परमात्मा ने मनुष्य को
अपने जैसा ही बनाया है।

पर मुझे बात
कुछ इसके विपरीत लगती है
यह तो मेरी ही करामात है
कि मैंने परमात्मा को अपने जैसा ही बनाया है.
बात सोलह आने सही लगती है
यदि मेरी तरह ही
दूसरे जीवों के पास
दिमाग होता
वे भी कल्पना के पंखों पर उड़ानें भरते
दृश्य और अदृश्य में तैरते, इतराते
तो वह भी अपने जैसा ही
परमात्मा बनाते.

मैं जो
परमात्मा का सृजक हूँ
क्यों अपने आप में ही सिमटा
अपनी ही कृति से
भय खाता हूँ
उसके आगे माथा घिसता है
घंटियां बजाता हूँ
सौ सौ पापड़ बेलकर
उसे मनाता हूँ
लाखों वर्ष पुराने पुरा-मानव की तरह
कुबड़ा हुआ
अपने पैरों के निशान खोज रहा हूँ.

यात्रा बड़ी लम्बी है
मैं और सूरज
एक दूसरे के साथी हैं
वह भी मेरे साथ ही चला था -
मैं जो
इतिहास का जनमदाता हूँ
कुछ ही नामों में

सिमटकर रह गया हूँ
यीद मैं
वृक्ष बन गया होता
तो अपने अंदर सिमटे
पुरा - मानव को
हवाओं का साथी बनाता
अंधेरे से प्रकाश की ओर आता
पर मैं तो अभी बीज ही हूँ.

सुना है
कि बीज के लिए ऋतु की
अच्छे हवा - पानी की
ज़रखेज़ धरती की
ज़रुरत होती है
अभी तो
सभी कुछ अधूरा है.

प्रलय एवं सृष्टि

यदि यह सत्य था
फिर तो
कुछ भी शेष नहीं रहना था
यदि कुछ रह भी जाता
तो वह केवल
मलबे का एक ढेर ही होता.

एक बार तो ऐसा लगा
जैसे धरती सूर्य से टकरा गई हो
उसका लावा पिघलकर
ऊपर से बह गया हो
क्षण में ही जैसे
सभी सितारे सभी नक्षत्र
एक दूसरे से टकरा गये हों.

यदि कुछ शेष था
तो मेरे वजूद था
जिसको मैंने कई बार टटोला
शायद केवल मैं ही
एकमात्र दर्शक था
और दूसरे सभी
इस महा-त्रासदी का
ग्रास बन गये थे.

मलबे का एक उँचा ढेर
मेरे सामने था

सभी कुछ जैसे गडमड हो गया हो
वृक्ष, मनुष्य, लावा, पानी, पत्थर
सभी कुछ घुलमिल गया था
कोई भी आकार सलामत नहीं था
रुप जैसे अरुप हो गया हो
सभी कुछ बे-पहचान
पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश
जैसे एक दूसरे में समा गये हों
न पैरों तले धरा थी
न ही सिर के उपर कोई आकाश
पाशुपात अस्त्र की करामात थी
अथवा किसी तांडव की शिखर
तीनों लोक
धरती, आकाश, पाताल
एक पिंड सा हो गये थे.

यह प्रलय थी अथवा कुछ और
यदि वह प्रलय थी
तो फिर यह एक भयानक हादसा था
सुना है कि प्रत्येक प्रलय के पेट में
एक सृष्टि छिपी होती है
प्रत्येक सृष्टि का अंत प्रलय होता है
जन्म-वृद्धि-विनाश और फिर जन्म
प्रल्य एवं सृष्टि के बीच एक संधि है
जीवन - मृत्यु , फिर जीवन
एक सिलसिला है
जो कभी भंग नहीं होता
यदि यह सत्य है
तो कुछ भी नष्ट नहीं होता
जो पदार्थ है
उसका नाश नहीं होता
वह केवल रुप बदलता है.

—

तोता और बाज़

यह शहीद के लहू की
ही करामात है
कि लोग
लकड़ी के टुकड़े को
सलीब का नाम देते हैं.

इतिहास के पृष्ठों में
गद्दार और शहादत देने वाले का नाम
एक साथ ही आता है.
इतिहास के पृष्ठों में
सुनहरी अक्षरों में लिखे जाने की बात
कहावत है
इसके बिना कुछ नहीं.
इतिहास तो लोग
धरती की छाती पर लिखते हैं
जो वृक्षों, नदियों, जंगल – वनों के साथ जुड़कर
अमिट हो जाता है.
साथ ही इतिहास हो चुके का नाम है
हो रहे या होने वाले के बारे में यह गूंगा है.

रोटी के लिए काम करने वाले को
क्या पता है
कि उसके बनाये 'चक' से
किसी ने
चरखड़ी का काम लेना है
उसकी बनाई 'टी' ने

सलीब बन जाना है
धरती के अंदर से
कंदमूल निकालने वाली
'सांग' ने घोंप बन जाना है.

अभी आप ने
तोते और बाज़ की
बात की थी
तोते तो गंगाराम ही बनते हैं
सदा मालिक की भाषा बोलते हैं
अपने लिए
कुछ कहने को
उनके पास शब्द नहीं होते..

हम तो केवल तोते ही हैं
मालिक का गुणगान करना ही
हमारा धर्म है
तोते कभी बाज़ नहीं हो सकते
बाज़ तो बस बाज़ ही होते हैं
जो गुलामी में भी मांस ही खाते हैं
यह तो शहीद के लहू की
करामात समझो
लकड़ी के टुकड़े को
लोग सलीब कहते हैं.

—

वृक्ष एवं मनुष्य

बात कोई पुरानी नहीं
केवल गत वर्ष की है
अपने कमरे में
जब मैं अकेला घूम रहा था
तो बाहर खिले
गुलमोहर के बावरे फूलों के हास्य से जैसे
मेरा कमरा भर जाता था.

गुलमोहर जब फूलों से
लद जाता है
उसके पत्ते गिर जाते हैं
टहनियां गुलदस्ता बन जाती हैं
पत्तों के गिर जाने का
उसे कोई ग़म नहीं होता
खुशी शायद
कुछ गंवाकर ही मिलती है.
गुलमोहर ने गिरे गये पत्तों की
कभी कोई चिंता नहीं की.

वृक्ष हो अथवा कोई मनुष्य
जब भी कोई
इन पर प्रहार करता है
तो वह चीख़ते हैं
यह बात दूसरी है
कि वृक्ष की चीख़ के अर्थ
कोई नहीं जानता.

कौन नहीं जानता
कि वृक्ष बढ़ते और फैलते हैं
ये सांस भी लेते हैं
इनकी अवधि भी निश्चित है
यदि यह हमारी तरह चल फिर सकते
यदि यह हमारी तरह बोल सकते
तो यह भी किसी दरबार में
अपनी फ़रियाद लेकर जाते.

एक समय ऐसा भी था
जब मनुष्य को वृक्षों में
पितरों की आत्मा दिखाई देती थी
वृक्ष जो अपनी छाल से उसका जिस्म ढंकते थे
जलाने के लिए ईंधन, खाने के लिए फल फूल देते थे.

कल्पवृक्ष की कल्पना भी
उसी मनुष्य की करामात है
कथा – कहानियों में भी आता है
कि जब शहज़ादा जनम लेता था
उसके नाम का
एक वृक्ष भी रोंप दिया जाता था
जिसका बढ़ना, जिसका फैलना
जिसका सूख जाना
शहज़ादे की नियति से संबंधित था
दोनों की योनि
जैसे एक सी हो.

मेरे कमरे के सामने के
गुलमोहर के
बाजुओं को काटकर
जब लकड़ी के लट्ठों में
बदला गया

तो कोई चीख़
कोई आवाज
उसके मुँह से भी निकली होगी
परन्तु मक़तल की चारदीवारी के बाहर
चीख़ कब जाती है
हत्यारे के तो कान भी नहीं होते
गुलमोहर के हत्यारे को सज़ा
भला कौन देगा.

ध्वनि, रंग और रेखाएँ

ध्वनि जब रेखाओं में बंधती है
तो रंग .खुद ही
निखर उठते हैं
ध्वनि के चक्र में घिरा मानव
परिधि में घिरे अणु की तरह
एक आकर्षण में बंधा
अपने सांसों के तार
मिलाता रहता है.

रंगों को नाम देना
आसान बात नहीं
यह सात से
सत्तर तक बन सकते हैं
मगर स्फेद, लाल और काला
प्रचलित से नाम हैं
काले पर दूसरा रंग नहीं चढ़ता
खून का रंग लाल है
मगर स्फेद होते देर नहीं लगती
रंगों के इस अदल बदल को
नामों में बांधना
आसान बात नहीं.

रेखाएँ उघड़ी – दुघड़ी हों
या किसी अनुपात में
कोई न कोई रुप बनता ही है
समानांतर रेखाएँ भी

अपना अर्थ रखती हैं
बच्चे द्वारा
सफ़ेद कागज़ पर छोड़ी रेखाएँ
सीधे - सादे मन की
प्रतिक्रिया होती हैं
रेखाएँ जब
गोल दायरा बनाती हैं
तो एक कारागार का जनम होता है.

—

मेरा घर

कोई भी मकान ऐसा नहीं
जिसे मैं अपना घर कह सकूँ
जिस मकान में मैं रहता हूँ
वह मेरा घर/नहीं
एक क़ब्र है
जिसमें दिन की थकान के बाद
मैं आकर लेट जाता हूँ.

यदि यह मकान मेरा घर होता
तो इसकी दहलीज़
मेरी प्रतीक्षा में रत होती
इसकी महराबें
मेरे स्वागत में अपनी बाहें फैला देती
मुझे अपने आलिंगन में कस लेतीं
और भरा पूरा प्यार देतीं.

इस मकान की दीवारें
कारागार से कम नहीं
मकान यदि घर हो तो मां के
गर्भाशय की तरह होता है
जैसे मां के गर्भ में भ्रूण सुरक्षित रहता है
घर भी उसी तरह सुरक्षा देता है
जिसमें पहुँचकर बाहर की सभी चिंताएं मिट जाती हैं.

घर कैसा भी हो
दीवारें कच्ची अथवा पक्की हों
//

छत यद्यपि सरकंडों की हो
अपनी छत के नीचे हर कोई सुरक्षित होता है
अपने घर की ईंटों से भी
कोई रिश्ता होता है.

मकान कभी घर नहीं होता
इसलिए मेरा कोई घर नहीं है
जिसकी एक एक ईंट में मेरा ख़ून पसीना है
वह भी मेरा घर नहीं है
जहां कोई स्नेह नहीं है
जहां किसी की कोई प्रतीक्षा नहीं
जिसकी महराबें कभी बाजू नहीं बन पाईं
जिसकी चौखट पर लिखा
''स्वागतम्''
केवल एक लिफ़ाफ़ा है
जिसका कोई अर्थ है भी
तो वह केवल निरादर का है
यह घर मेरे लिए क़ब्र है
जिसमें दिन के कार्यों का झंझोड़ा
चिंताओं से व्यथित चुपचाप लेट जाता हूँ.

—

तू कोई भी हो

तू मेरे अंग-संग ही रही
कभी पार्वती, कभी उमा
और कभी सती बनकर
नाम कितने ही हो सकतें हैं
पर वफ़ा का नाम एक ही होता है
तुम कोई भी हो सकती हो
नाम में क्या रखा है?

शरीर पर भस्म पोतकर
सिर की जटाओं को बिखेरे
शमशान् में
सांप और बिच्छुओं के बीच रहने वाले
मेरे जैसे कंगाल में
पता नहीं तुमने क्या देखा था ?
जो मेरे लिए तू वर्षों
तपस्या करती रही.

यह मैं नहीं तेरी वफ़ा ही थी
कि तेरे शव को उठाए
युगों युगों तक
मैं तांडव नृत्य करता रहा
जिसकी चाल तेज़ से तेज़ होती गई
यहां तक कि तेरी वफ़ा
टुकड़े-टुकड़े होकर
धरती पर
दूर दूर तक न बिखर गई

मैं तब तक नाचता रहा
जब तक वह बीज बनकर
वृक्ष – पौदों की गंधों – सुगंधों में
चिड़ी – जानवरों के दूध पीते बोलों में न रच गई
मैं नाचता रहा तांडव नृत्य.

मैं जो अब अकेला हूँ
इन गंधों – सुगंधों और हवा में तैरते
पंछियों के कलरव में घिरा
अकेला भी नहीं हूँ
इन्हें नमस्कार करता
मैं यह अनुभव करता हूँ
कि जैसे यह नमस्कार तेरी वफ़ा के लिए हो
यही मेरी आराधना है
तुम पार्वती हो उमा हो
सती भी हो
कोई भी हो सकती हो
नाम में क्या रखा है?

—

ओं शांति

ओं शांति ! शांति !! शांति !!!
भीतर कोई हलचल सी है
दीवार पर चिपकी
कतरन पर लिखा है
ओं शांति.

लगता है जैसे अक्षरों में
अशांति आ गई हो
सभी अक्षर जैसे एक दूसरे से
बागी हो गये हों
यह भ्रम है या सत्य
या केवल दृष्टिभ्रम है
कुछ भी हो, इतना अवश्य है
भीतर कोई हलचल सी है.

इसका एक एक अक्षर
मैं निगल जाता हूँ
ओं शांति ! शांति !! शांति !!!
होठों से जाप करता हूँ
कभी चुप्पी के अक्षरों से
कभी बोलते अक्षरों से
होंठ हैं कि हिलते ही नहीं हैं
आखें बंद करके
अपने भीतर देखता हूँ
जहां अंधेरा ही अंधेरा है
खला ही खला है.

देह को जलाती
बाहर की गर्म-लहरें
देह में कंपकपी पैदा करती
बाहर की शीतल लहरें
देह को वृक्ष की भांति
झंझोड़ कर रख देती हैं
और सारे के सारे अक्षर
एक - एक करके
होठों से गिर जाते हैं
अ - उ - म
ओं शांति !
कहां है शांति ?
न बाहर शांति है
न भीतर शांति है.

—

उड़ते हुए पल

क्यों उड़ते हुए पलों को
पकड़ने का विफल प्रयास करते हो
ये पल हवा हैं
ये पल तितलियां हैं
इन्हें बाँधना मुश्किल है.
जिस पल को जी रहे हो
उसे ही ओढ़ो, पहनो
उड़ते पलों के पंखों पर
इतिहास नहीं लिख सकते
यदि कुछ छोड़ जाने का इरादा ही है
तो 'अब' के पलों पर अंकित करो.

पल जो जी चुके हो
वही अपना है
आ रहे पल का क्या भरोसा है
कि वह किसका हो
कौन जानता है
कल का सूर्य किसका है
विजय की पताका
तुम्हारे हाथ की बजाए
किसी और के हाथ भी तो हो सकती है.

जो पल जा रहा है
वह सुनहरी है
इसके अक्षरों को सजाओ
भीड़ को चीर कर आगे आओ
मशाल जिसके हाथ में होगी
लोग उसी के पीछे चलेंगे.

वृक्ष, दीवार और अंधा कुआं

मेरे अन्दर एक वृक्ष है
जो बारह महीने तीस दिन
खिला रहता है
उसकी शाखाओं से बँधे
पिंजरों मे बन्द सपनों को
मैंने कई बार
खुली हवा में छोड़ा है
यह बात दूसरी है
कि सपनों के पंछी
लौट कर ही नही आये.

मेरे अन्दर
एक दीवार भी है
दीवारों के बीच जीना
और बात है
अपने अन्दर दीवार लिये फिरना
और ही बात है
मैंने कई बार
इस दीवार को तोड़ने की कोशिश की
मगर हर बार मुझे
असफलता ही देखनी पड़ी है.
और यह दीवार
और उँची, और उँची
होती गयी.

मेरे अन्दर
एक कुआं भी है

जिसमें मैं कई बार उतरा हूँ
पर, सघन अंधेरे के बिना
मुझे, वहां से कुछ नहीं मिला
इसका कोई तल नहीं, कोई पार नहीं.

मैंने दोस्तों से, कई बार
वृक्ष, दीवार और कुएँ के बारे में पूछा है
मगर वे
इस पहेली को, कोई नाम
नहीं दे सके
इसका कोई हल
नहीं ढूँड सके.

कांटों का ताज

जब ईसा जनम लेता है
तो उसके सिर पर
कांटों का ताज होता है
उसके हाथ और पैरों पर
कीलों के निशान होते हैं
"तमसो मा ज्योर्तिगमय"
अंधेरे से ज्योति की ओर
ले जाने की लालसा
प्रत्येक मनुष्य की लालसा है.

यदि बोधि-द्रुम
प्रत्येक नगर में होते
तो शायद दुनिया पागल हो जाती
और यदि
प्रत्येक पहाड़ पर नूर दिख सकता
तो चारों ओर अंधकार ही छा जाता
प्रकाश की चकाचौंध भी तो अंधकार होती है.

माछीवाड़ा के जंगलों में
सोये यात्री का स्वप्न
अभी अधूरा है
.ज़ुल्म का चक्र अब भी चल रहा है
खोल की कैद में
दम घुटता है
मुखौटे के पीछे छुपा अहं
लहू की नदी में से

गुज़र जाने को आतुर है.

जंगल बेशक कितना भी सघन क्यों न हो
यह हवा की तलवार बनकर
एक ही सांस में
गुज़र जाना चाहता है.

—

दस्तक

सामने देखो
रोशनी का एक गोला सा उभर रहा है
तुम उसे कोई भी नाम दे सकते हो
उसे सोने की थाली भी कह सकते हो
तुम उसे रबड़ की गेंद भी कह सकते हो.

मगर मैं जानता हूँ
तुम उसे कोई नाम न दोगे
क्योंकि तुम तो
उसे देखना भी नहीं चाहते
अंधेरी गारों में रहते रहते
तुम रोशनी से घबराने लगे हो.

सुनो शायद कोई दस्तक दे रहा है
अपने अंदर के दरवाजे खोलो
घर के दरवाज़े तो
बड़ी देर से खुले हैं
सह खटखट तो अंदर ही से आ रही है
घबराओ नहीं
यह आवाज़ तुमारी अपनी है
शायद यह आवाज़
तुम्हारी ज़मीर से उठी हो.
देखना कहीं यह दस्तक बंद न हो जाये
यह सदा कहीं
अपने ही क़दमों
वापिस न चली जाये.

ज़रा गौर से सुनो
घोड़ों की टापों की आवाज़
तुम्हें ही बुला रही है
शायद सफ़र का आगाज़ है
उठो शायद किसी घोड़े की पीठ.
तुम्हें बुलावा दे रही है
आओ इस दौड़ में
हम इकट्ठे हो जायें
आओ रोशनी के गोले तक
एक दौड़ लगायें.

—

जैतून की शाख़

इस सघन दुनिया मे
मेरा भी छोटा सा घर है
जिसमे नीम के एक वृक्ष के इलावा
चार गुलमोहरे भी है

मै नही चाहता कि जग लगे
दुनिया तबाह हो जाये
धरती की देह
हीरोशीमा एव नागासाकी के
घावो से सन जाये
मै नहीं चाहता कि कोई बम
मेरे घर पर आ गिरे
मै नहीं चाहता कि कोई बम
हमसाये के घर जा गिरे
येसे बारुद हो या एटम
अपने और बेगाने मे
अतर नही करता
हमसाये के घर लगी
आग का सेक
अपने घर भी तो पहुँचता है

ये दुनिया-यदि कोई बाग है
तो उसमे मेरा घर
एक वृक्ष के सदृश है
वृक्ष जो जैतून का है
जो शाति का चिन्ह है.

मै जब भी कभी
किसी फाख्ता की चोच मे,
जैतून की शाख देखता हूँ
तो मुझे लगता है
कि जैसे वह शाति की भटकती आत्मा हो
जो अपने अस्तित्व के अनुसार
शाति का सदेश
दूर तक पहुँचाने की इच्छुक हो

मै तो चाहता हूँ
दुनिया मे अमन रहे
शाति रहे
जिस दुनिया मे
मेरा भी छोटा सा एक घर है
जिसमे नीम के एक वृक्ष के बिना
चार गुलमोहरे भी है

अभय मुद्रा

मैं कोई बुद्ध नहीं
मैं तो मुसीबतों का मारा
अपने आप में सिमटा
एक अदना सा मानव हूँ
या फिर बीयाबानों में खड़ा
फूल पत्तों से विहीन
एक वृक्ष हूँ.

समुद्र की तरह
ऊपर से मैं शांत दिखता हूँ
परन्तु मेरे भीतर अनेकों ज्वारों का सिलसिला है
सैंकड़ों कंपनों की थरथराहटें हैं.
भीतर जैसे कुछ मर रहा है
भीतर जैसे कुछ टूट रहा है
कभी वृक्षों के गिरने का
कभी पहाड़ों के धंसने का शोर है
सभी कुछ जैसे टूट रहा है
ये मेरी अभय - मुद्रा नहीं
भय - मुद्रा है.

मार की सेना
जब भी आक्रमण करती है
कुत्ते के पिल्ले सा
भयाकुल
अपनी पूँछ अपनी रानों में दबा लेता हूँ
या फिर - कबूतर की तरह

आंखें भींच लेता हूँ
बिल्ली जो मुझे दिखाई नहीं देती
भला मुझ पर, कैसे झपट सकती है.

मैं कोई बुद्ध नहीं
मैं तो एक अदना सा मानव हूँ.

—

सूर्य और मैं

मैंने सूर्य से प्रश्न किया
कि वह सवेरे जनम लेता
शाम को मर जाता है
दूसरी सवेर फिर नया होकर
आ जाता है
इसमें क्या भेद है?
वह हंसा
ठहाका मारकर हंसा
और हंसता रहा
मैं उसकी हंसी के समुद्र में
तैरता रहा
सूर्य अस्त हो गया
मैं अब भी
उसकी हंसी को ओढ़े खड़ा था.

मैं जब घर लौटा
अलमारी में से
चश्मे की शीशियां
फ़र्श पर दे मारीं
दीवार पर चिपके
बहती नदी, भागते घोड़ों
और उड़ते पंछियों के चित्रों के
फ्रेम तोड़ दिये
अब सभी कुछ आज़ाद था.

अब मैं अपने

शरीर पर धूप ही ओढता हूँ
मुझे मेरी दाढी के वाल
सूर्य की किरणो के से
दिखाई देते है
यह शायद भीनर उगे
प्रकाश के वृक्ष की कृपा है

—

स्व और सूर्य

वह मा नहीं बन सकी
वह कवारी कन्या थी
उसने मरे बच्चे को
जनम दिया था
लोग खुश है
वह मा नहीं बन सकी

मै पूछता हूँ क्या ईसा
कवारी मरियम की कोख से
नहीं जनमा था
क्या वह सूर्य
तोहमतो की अधेरी गुफा से
उदय नहीं हुआ था
उस समय
आप खुश नहीं थे

वह सूर्य
यदि मरा हूआ नहीं पैदा हुआ
तो तुमने स्वय
उसे सूली पर चढा दिया था
और फिर आप खुशी से
नाच उठे थे
मै आपको
फिटकार देता हूँ
आपको शर्म आनी चाहिए
अब आप

अपने हाथो कत्ल किये
सूर्य के पैरो के निशान
ढूँडते फिरते हो

यह सूर्य ही भलामानस है
जो भेड के लेले की तरह मासूम है
जो आपके भीतर उतर गया है
आप अपने मन की
अधी गुफा मे उतरो
तो आपको रोशनी के समुद्र मिलेगे
अपने हाथो कत्ल किये गये
सूर्यों की लम्बी कतार मिलेगी
आप सूर्य को नहीं
अपने स्व को कत्ल करते हो

—

सूर्य का क़त्ल

सच तो निरवस्त्र होता है
मै सच्च की भाति ही
नगा हो जाना चाहता हूँ
ताकि आपकी आखे चौधिया जाये

आप मुझसे नही, सच्च से डरते हो
यह फासिया, यह सलीबे,
ये काल-कोठिरिया
इनमे दिये जा रहे तसीहे
मेरे लिये नहीं
यह तो
सच्च को कत्ल करने के
यत्न मात्र है

मै तो
कत्ल होता ही आया हूँ
कभी मे पानियो मे तैरा
कभी तथाकथित मुकाबलो का शिकार बना
आपने मेरे सिर पर गद्दार होने का
सेहरा बाधा है
आप अपने सिरो पर
हजारो कत्लो का बोझ
उठाये घूमते हो

पर सच तो अभी तक जीवित है
जो हँसी भी सच

होसी भी सच
जो आदि भी सच है
जो जुगादि भी सच है
इसका कत्ल नहीं होता
यह तो सूर्य है
जो कभी नहीं मरता
जो कभी नहीं मरता

—

काला गुलाब

एक और आवाज दबा दी गई
एक और सपना कत्ल हो गया
जब से आदम ने
वर्जित वृक्ष का फल चखा है
कभी उसे स्वर्ग से
कभी उसे दुनिया से
बाह निकाल दिया जाता है

उसने वर्जित-वृक्ष का फल चखा था
फिर वह अन्याय को
कैसे सहन करता
उसकी काली चमडी के नीचे भी
लाल खून मचलता था
ख़ून जो काले और गोरे दोनो में
एक रग का होता है
चमडी काली हो अथवा गोरी
काटने से
दर्द एक सा ही होता है

वह अफ्रीका के जगलो मे उगा
काला गुलाब था
उसकी एक आवाज के पीछे
उत्तर-दक्षिण - पूर्व - पश्चिम्
सभी बोले उठे
उसकी प्राणरक्षा के लिए
दुनिया का दिल धडक उठा था

गोरे जालिमो के दिल मे
दया कहा होती है
गोरे रग का अहकार
ख़ून पीकर ही शात होता है
जल्लादो ने उसे फाँसी दे दी
मानवता की आंख अभी तक नम है
काला गुलाब
रगले भविष्य का सपना बनकर
अभाव - ग्रस्त लोगो की ख़ाब - गाहो मे चला गया है

भले लोगो ! क्या कभी सूर्य मरा है
यदि पृथ्वी इससे मुँह मोड भी ले
तो इसका तेज
इसका प्रकाश कम नहीं होता

क्या हुआ यदि एक आवाज दबा दी गई
क्या हुआ यदि एक और सपने का
कत्ल हो गया
बोये गये सिरो की फसल
एक दिन अवश्य उगेगी
जगह - जगह काले गुलाब जन्म लेगे
एक आवाज
सहस्र आवाजो मे बट जायेगी
एक बाढ आयेगी एक तूफान उठेगा
जो पुराना है सभी ख़त्म हो जायेगा

—

कोलाज

अपनी खो चुकी
पसली की तालाश मे
आदम को घर छोडे
सदिया बीत गई है
वह जिस भी औरत को मिला है
उसने पसली की तालाश मे
उसके जिस्म को टटोलकर देखा है

—

अस्तबल मे बधे घोडे
भला सूर्य के रथ के आगे
कभी जुते है?
उनके खून मे मचलती शक्ति
तद्रा मे डूबी
एक दिन सो जाती है
या फिर
मर जाती है
अस्तबल मे बधे घोडे
केवल हिनहिनाते हैं

—

सेब के वृक्ष की टहनियो मे
छुपा साप
आज भी हव्वा के कानो मे
चुगलिया करता है
वर्जित-वृक्ष के फल का स्वाद
आज भी

आदम की जिह्वा पर है.
इसका दंड
उसकी देह का संताप बन चुका है
धरती का मोह
स्वर्ग के मोह पर हावी है.
मस्तक पर खुला
तीसरा नेत्र
उसे चैन नहीं लेने देता
बेचैनी
भटकन
जैसे उसकी नियति है.

—

भ्रम

यह आपका भ्रम है
कि लहू बोने से
मृत्यु ही उगती है
जिन्दगी भी उग सकती है
क्या आप को
रक्त-बिन्दु की कथा याद नहीं
जिसके लहू की प्रत्येक बूँद से
एक नया रक्त – बिन्दु
जनम ले लेता था

आप को यह भी भ्रम है
कि इरादा गुलाम हो सकता है
सिरो को बीजने वाले
सिर झुकाया नहीं करते
जिन्होने यार के कूचे से
निकलने का प्रण ले रखा हो
वह सरवश लुटाकर भी
मैदान से नही भागते

आपको भ्रम है
यशूह को सूली चढाने से
उसका फिर जनम नहीं होगा
सुकरात विषपान के बाद
पैदा नही होगा
यशूह, सुकरात, गोबिन्द, चो-गुवेरा
किसी भी मनुष्य में
किसी भी समय
जनम ले सकते हैं

—

अतीत के पुजारी

तुम जो
अतीत के पुजारी हो
पुरानी लीक को ही
पीटे जा रहे हो
मरे या अधमरे
खुदाओं की पूजा करते हो
तुमसे भला
रोशनी की बात
कैसे हो सकती है,

बंदरिया मरे बच्चे को
छाती से सटाकर
आयु व्यतीत नहीं कर सकती
अतीत मरे सांपों के बिना
कुछ नही होता
मरे सांपो को गले मे डालक
कोई शिव नही बन सकता
कोई दुनिया की तमाम
विष नहीं पी सकता.

मंत्रों के निरर्थक शब्दों में
कुछ नही होता
समाधि लगाने से
काया - पलट नहीं सकती
टूने - टामनों से भाग्य नहीं बदलता
भला
धरती को तोड़े बिना

कभी कोई बीज
वृक्ष बना है
हाथ - पैर हिलाये बिना
कोई नदी के पार गया है

हाथ जो
भाग्य बदलते है
इनकी लकीरो मे सोये श्रम को जगाओ
साप की तरह
अपने शरीर के उपर से
पुराने सस्कारो की
केचुली उतारो
अतीत्त से आज की ओर आओ

—

आम आदमी

मै कभी समूचा
कभी मेरा धड कभी मेरा सिर गायब होता है
मै जो विज्ञापन नहीं बन पाया
मेरी कथा, मेरे दु ख
ससार की किसी भी
दास्ता मे शामिल/नहीं

पाँच वर्ष के पश्चात्
मेरा नाम लिया जाता है
मेरी जय बोली जाती है
मेरी 'मै' व्यापक हो जाती है
कुछ दिनो की तडक - भडक के बाद
सब्ज - बागो का यात्री रह कर
मै फिर गायब हो जाता हूँ

शहर की दीवारो पर चिपके पोस्टर
जिन मे नारे और तसल्लियो के बिना
कुछ नही होता
मेरी जागीर होते है
वे मच जिनसे, जोर जोर से मेरी ही बात होती थी
कहीं दिखाई नहीं देते

मेरे नाम पर कुछ एक को, कुर्सी मिल जाती है
कोठी और कार भी मिल जाती है
उसके रोजनामचे मे भी
मेरा नाम नहीं होता, मैं फिर गायब होता हूँ

बेशक मैं ही हूँ, जो सब कुछ बदलता हूँ
मगर मेरा कुछ नहीं बदलता
कभी मैं समूचे का समूचा गायब होता हूँ
कभी मेरा धड़
औ' कभी मेरा, केवल
सिर ही गायब होता है

दौड

तुम भी दौडो
कि सारा देश दौड रहा है
काश्मीर से कन्या कुमारी तक
कन्या कुमारी से काश्मीर तक
कही से सैकडो
कही से हजारो
कही से लाखो
कही पूरे का पूरा नगर
और कही पूरा का पूरा प्रात ही दौड रहा है

बस हमने दौडना है
कन्या कुमारी से काश्मीर तक
काश्मीर से कन्या कुमारी तक
देखना, आप कहीं पीछे न रह जाये
धरा के गर्भ मे, जो
इतिहास - कवच उतारा जायेगा
उसमे आप का नाम नहीं होगा-
इसीलिए , तुम भी दौडो
दौडो, और तेज दौड़ो
यह मत पुछो
आप ने कहा जाना है
यह मत पूछो
आप ने कहा पहुँचना है
क्योकि
मजिल का तो रैफरी को भी पता नहीं
बस, सभी ने दौडना है
सो, तुम भी दौडो

दौड़ो
रैफरी ने व्हिस्त्ल दे दी है
आँखे बन्द करके
आज्ञा का पालन करो
दौड़ो
और अगर आगे
कोई अधा कुआ आ जाये
या फिर कोई गहरी खाई आ जाये
तो, बे-फिक्री से उसमे कूद जाओ
आखिर, कहीं तो पहुँचना है
किसी मजिल तक न सही
मौत की आगोश मे ही सही
दौड़ो
यह मत पूछो कि पहुँचना कहा है

—

एक एक हो जाओ

पहले वह एक थे
फिर, एक से दो हो गये
फिर, दो से तीन, चार
वे सभी क्राति लाना चाहते थे
मगर, अपनी अपनी भ्रातियो मे फँसकर
टूट गये – बिखर गये

अब उनके रास्ते अलग है
झडे अलग हैं
दृष्टिकोण भी अलग है
वे सभी
अब भी लडते है
मगर शब्दो के ही अस्त्रो-शस्त्रो से
एक दूसरे की निन्दा करते है
प्रस्तावो द्वारा प्रहार करते है
वक्तव्यो का युद्ध लडते है
एक दूसरे को नीचा दिखाना ही
अब, उनकी सतुष्टि है – तृप्ति है

क्राति कहा खो गई
'दुनिया भर के मजदूरो-एक हो जाओ'
का नाअरा भी जैसे बदल गया
अब एक हो जाना नहीं
एक – एक हो जाना ही उनका लक्ष्य है
शायद इसीलिये नाअरा भी बदल गया है
'दुनिया भर के मजदूरो एक – एक हो जाओ'

क्रांति,
भ्रांतियों के ढेर के नीचे दबी
कराह रही है
उसका मुक्तिदाता, अब कोई नहीं

—

अप्प दीपो भव

शास्ता जब बुझने लगे
आनद ने पूछा
हमे रोशनी कौन देगा
वह बोले
"अप्प दीपो भव"
अपने दिये खुद बनो

बुद्ध का यह कथन
कल भी सत्य था
आज भी सत्य है
उपनिषद भी बोले थे
जब सभी रोशनिया दम तोड दे
सूर्य और चाद छुप जाये
दीप बुझ जाये
आखो की ज्योति जवाब दे जाये
तो अपनी अन्तर आत्मा से देखो
यह बात उस समय भी सत्य थी
आज भी सत्य है
अधकार मे भटकते लोगो
अपने दिये खुद बनो

पत्थरों की नगरी

ये मैं
किस नगरी मे आ गया हूँ
जिसके लोग
किसी टूणे मे बधे
पत्थर बने
एक दूसरे की ओर
देखे जा रहे है
न रोते है
न ही कुछ बोलते है

सुना है
इस नगरी के बादशाह को
कुछ दिन हुए
एक सपना आया था
जैसे वह
राजा से रक हो गया हो
उसने देखा था
गली - कूचे के कुछ लडके
उसके हीरो से जडे
ताज के साथ
फुटबाल खेल रहे है
उसकी कीमती पोशाक की कतरने
सरकडो और डडो पर सजाए
मुर्दाबाद के नाअरे लगा रहे है

उसने यह भी देखा था
कि उसके नगे शव पर
गिद्ध झपट रहे है

और कुत्ते
उसका पुर्जा-पुर्जा
कर देने को
जैसे टूटकर पड रहे हैं

वह जब सबेरे उठा
उसने हुक्म दिया
नगरी के इर्द - गिर्द
हाथी - क़द दीवार बना दो
दरवाजो पर पहरे बिठा दो
कोई खबर अदर न आये
कोई खबर बाहर न जाये
नगरी के
प्रत्येक आदमी की
खोपडी को चीरकर
उसका दिमाग निकाल दो
ज़ुबान मे कील ठोक दो
कानो मे गर्म
कडवा तेल डाल दो

हुकम
सरजाम दिया गया
कहते है बादशाह
उस रात आराम से सोया
बस उसी दिन से
इस नगरी के लोग
पत्थर बने
एक दूसरे की ओर
देखे जा रहे है
न रोते है
न हसते है
न कुछ बोलते हैं

—

आपात स्थिति

बहते हुए दरिया
थम गये

उडते हुए पछी
हवाओ मे ठहर गये

समय के चचल पाव
रूक गये

वृक्ष
पत्थर हो गये

आवाज अधे कुए मे
उतर गई

मरघट की सी शाति
एक मजबूरन चुप्पी

यह क्या हो गया था?
जिस्म बस
मशीन की तरह चल फिर रहे थे

—

काला घोड़ा

मै झाडी मे दुबककर बैठा
खरगोश नहीं
मै तो
अक्खड काला घोडा हूँ
जो अपनी टापो के निशान
तुमारी पीठो पर छोडकर
आगे चला जायेगा
और उनकी आवाज
कई युग, कई सदिया
तुमारे दीमागो की
रोशन सडको पर तैरती रहेगी

यदि मै झाडी मे दुबककर बैठा
खरगोश होता
तो तुम्हारे ख़ूँख़ार पजो से
बच निकलना कठिन हो जाता
तुम्हारी गिद्ध जैसी आखो ने
मुझे ढूड लेना था
तुम्हारे मोर जैसे कानो ने
मेरी निमेष सासो को
ताड ही लेना था
आज नहीं तो कल
मै तुम्हारे डायनिंग टेबल पर होना था

यह तो खरगोश का दोष है
उसकी नियति है
काले झाडो मे

भला सूर्य का टुकडा
कैसे छुप सकता है
अच्छा होता यदि वह
किसी अंधी गुफा मे उतर जाता

मै उसके बारे क्यो सोचूँ
मै तो अक्खड काला घोडा हूँ
जिसकी चाल मे
अंधडो की तेजी है
जिसकी आवाज से
खूँखार हाथ सहम जाते है
और वह खरगोश की भाति
काले झाडो मे दुबक जाते है

—

नियति

जब कोई
अपनी चमड़ी के नीचे चुभते हुए
काटे को बर्दाश्त नहीं कर सकता
और उसे निकलवा देता है
तो उसकी मृत्यु हो जाती है

जब कोई
किसी दूसरे से
अपने घर का पता पूछ बैठता है
तो विस्मय की
कोई बात नहीं
अपने आप मे गुम हो चुके
और समुद्र मे गर्क हुए
की थाह कौन पा सकता है

और जब कोई
अपने घर की जगह
दूसरे को अपना समझकर
भीतर प्रवेश कर जाये
तो उसका स्वागत नहीं होता
इस तरह गये
नचिकेता को भी
यमराज ने फिटकार दिया था

जब कोई
अपने ही भीतर
विजय प्राप्त करता

या हार जाता है
तो उसका कोई साथी
कोई मध्यस्थ नहीं होता

कोई भीतर से
टूट गया है
या साबित है
इसके बारे में कोई
क्या जानता है
बाहर और भीतर से
एक न रह सकना
आज के मनुष्य की
नियति है.

—

दरवाज़े खोल दो

दरवाज़े खोल दो
प्रकाश को भीतर आने दो
क्यो साकल चढाये पड़े हो

प्रकाश तो
दरारो से भी आयेगा
फिर हिचक कैसी
उठो – कुल्हाडी उठाओ
दरवाजे तोड दो

क्यो ?
क्या डर लग रहा है
अतीत का मोह जकडे जा रहा है
कोई पहाड नहीं टूट पडेगा
कोई बिजली नहीं गिरेगी
कोई आफत नहीं आयेगी
उठो – प्रकाश को आने दो
दरवाजे खोल दो

—

शब्द और अर्थ

हम अपने कधो पर
मर चुके शब्दो के तावूत
उठाये फिर रहे है
हर शमशान सीमा बन्द है
इनके दफनाने के लिए
कोई जगह नहीं

हर शब्द की मौत पर
हमने मरसिया पढा है
अपनी आखो के सामने
सैकडो शब्दो को जान तोडते
सहकते और विलखते देखा है

शब्द तो पैरहन है
अर्थ मात्र के
अर्थ जो कभी नहीं छीजते
शब्द घिस जाते है
फट जाते है
परन्तु अर्थ चिरजीव है
अर्थ कभी नहीं मरते

—

क्षणिकाएँ

अहं

आओ इस अहं को
किसी पहाड़ी नदी के
बहाव में
फेक आएँ
जब मै ही मर चुकी हैं
तो इस अहं से
क्या लेना है.

धड़

जब साहब ने देखा
सामने खडे धडो से
सिर गायब है
तो वह
बडा खुश हुआ.

आत्महत्या

यदि आत्म घृणा
सहन नहीं कर सकते
तो कुतब से छलाग लगाकर
या गाडी के नीचे सिर देकर
आत्महत्या की जरूरत नहीं
चुल्लू भर पानी मे
नाक डुबोकर भी मरा जा सकता है.

पागल

कहते है – वह पागल था

तमाम उम्र
रेत में से मछलियाँ पकड़कर
भूनकर खाता रहा

लोकतंत्र और रोटी

गरीब की थाली में
दो जून की रोटी
नुकल – पानी के लिए
अरहर की दाल चाहिए
लोकतन्त्र से उस ने क्या लेना है

समाजवादी

पार्कर के पैन की
निब टूट गई है
नहीं तो हम
किसान – मजदूरों की
जिन्दगी पर
और भी कविताएँ लिखते

मज़दूर

बिना मस्तिष्क का आदमी
सर पर असह बोझ
चलने से मजबूर
सज़ा बस
एक पापी पेट की

काम

काम अनग भी है
और अभग भी
अमूर्त ने मूर्त सता रखी है
एक बिना पख की पछी
जब उडता है

सातो पाताल, सातो आकाश
छान देता है

दल बदली

दल बदली हो
या दिल बदली
यह मतलब के सौदे है
जितना गुड डालोगे
उतना ही मीठा होगा

इन्कलाब

एक जोशीला नाअरा
जो मजदूर के हाथ से
फिसलकर
प्रत्येक बशर की
मलकीयत बन गया है

प्यार

प्यार
डबल रोटी के पीसो पर लगे
माखन की तरह है
जो आत्मा के बजाय
केवल जिस्मो की
गिजा बनकर रह गया है

राजनीति

राज जमा नीति
जब तक राजाओ का
अस्तित्व बाकी है
यह राजनीति हो रहेगी
लोकनीति नहीं
बन पायेगी

विदूषक

मेरे पास कुछ भी अपना नहीं
मेरी कोई इच्छा नहीं
मेरी कोई जरूरत नहीं
मै तो बस
दूसरो मे ही जीता हूँ
उपर से हंसता हूँ
अन्दर से रोता हूँ.

लेखक

न कोई लेखा
न कोई जोखा
अपने आपसे बस
निपट एक धोखा

पत्नी

अपने जिस्म से
छोटी चादर
सर ढको तो धड नगा
धड ढको तो
समूचे नंगे.

सड़क

सडक –
एक बेज़ान औरत
जिसको रौदकर
हर कोई
आगे बढ़ जाता है.

जिनस

जिनस

चौबारे पर बैठे रडी
यदि युवा तो महगी
यदि वृद्धा
तो डस्टबिन का शृगार

पागल-२

'परमात्मा
टटीहरी की तरह
ये समझता है
कि आसमान
उसकी टागों पर खडा हैं'
वह पागल था
यह बात कहकर चला गया

एक आवाज

भीड मे चल रहे
एक आदमी ने
नाअरो की गूँज मे से
एक अनसुना नाअरा दिया
क्यो डाल रहे हो लम्बी तारीख
यह क्राति का रास्ता नहीं

मुक्ति

खेल खत्म हो चुका है
कुर्सिया धडाधड बद हो रही है
गेट बद हैं
जनगन मन के अधिनायको की
जय होनी है
कुछ टटपूजिए तटस्थ है
कुछ उतावली मे है
कब गेट खुलेगे
कब मुक्ति होगी

क्यू

क्यू मे खडी हर उम्र
बेसुध है
जिन्दगी की बिखरी जरूरतो को
आखे मीटे एकत्रित करते लोग
अगुवाई रहित है
ये कब आयेगे
असली क्यू मे

हम

हम काच के जार मे बद
मछलियो की तरह है
हम जाति, धर्म, भाषा
बिरादरी एव देश से परे
सोच सकने मे असमर्थ है
हम उस घोघे की तरह है
जिसे अपने ही खोल मे
ब्रह्माड दिखाई देता है

जिन्दगी

स्वार्थ से लिप्त
कितनी हसीन लगती है
परन्तु भीतर से
झुलसी, बेरस एव कर्महीन है
इसकी सांसो मे
महक नही, रग नहीं

—

□□□